

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, ल्यूक-प्रेरितों के कार्य का धर्मशास्त्र

सेशन 10, मार्शल, वादा किया हुआ उद्धारकर्ता, परमेश्वर का राज्य।

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन और ल्यूक-एक्ट्स के धर्मशास्त्र पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 10 है। मैं, हॉवर्ड मार्शल, वादा किया हुआ उद्धारकर्ता और परमेश्वर का राज्य।

ल्यूक और धर्मशास्त्र पर व्याख्यानों के साथ आगे और ऊपर।

कृपया मेरे साथ प्रार्थना करें। पिता, आपके वचन के लिए धन्यवाद। आपकी पवित्र आत्मा के लिए धन्यवाद। आपको जानने, प्यार करने और आपकी सेवा करने के विशेषाधिकार के लिए धन्यवाद। हमें आशीर्वाद दें क्योंकि हम आपके वचन को देखते हैं और हॉवर्ड मार्शल द्वारा ल्यूक की शिक्षाओं के बारे में सिखाया जाता है। हम ये बातें यीशु के नाम पर प्रार्थना करते हैं। आमीन।

इन अंशों की व्याख्या हंस कोन्ज़ेलमैन द्वारा विवादित है। उनका तर्क है कि ल्यूक उद्धार के समय को कुछ ऐसा मानता है जो अब खत्म हो चुका है और पॉल के विपरीत समाप्त हो गया है जो अपने समय को युगांतिक समय के रूप में देखता है।

और इसके अलावा, यीशु का आगमन अंत नहीं बल्कि मुक्ति के भविष्य के समय की एक तस्वीर मात्र है। इस कथन का कारण यह है कि ल्यूक 22:35 और उसके बाद, ल्यूक यीशु की अवधि और वर्तमान समय के बीच अंतर करता है। हालाँकि, यह संदर्भ उस भार को सहन नहीं करेगा जो कॉन्ज़ेलमैन इस पर थोपने की कोशिश करता है।

यह निश्चित रूप से, मंत्रालय की अवधि और यीशु के जुनून के साथ शुरू हुई अवधि के बीच अंतर करता है। लेकिन इसका प्राथमिक संदर्भ तत्काल बाद की घटनाओं से है, जिसमें गेथसेमेन का दृश्य भी शामिल है। ल्यूक 22:35 और निम्नलिखित।

यीशु ने उन से कहा, जब मैं ने तुम को न रूपये, न झोली, न जूतियां पहिनाए भेजा, तो क्या तुम्हें किसी वस्तु की घटी हुई? कुछ नहीं, उन्होंने कहा। उस ने उन से कहा, परन्तु अब जिस के पास रूपयों की थैली हो वह ले ले, वैसे ही झोली भी। जिसके पास तलवार न हो वह अपना कपड़ा बेचकर एक खरीद ले।

क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ, कि यह वचन मुझ में पूरा होना अवश्य है। और वह अपराधियों के संग गिना गया, क्योंकि जो कुछ मेरे विषय में लिखा है, वह पूरा होने को है। और उन्होंने कहा, हे प्रभु, देख, यहां दो तलवारें हैं।

क्या यह पर्याप्त है? लेकिन प्राथमिक संदर्भ गेथसेमेन में दृश्य सहित तुरंत बाद की घटनाओं का है। और यह एक चेतावनी है कि उत्पीड़न और पीड़ा निकट है। पाठ में निश्चित रूप से ऐसा कुछ

भी नहीं है जो एक ओर पूर्ति के पिछले समय और उद्धार की उपस्थिति और दूसरी ओर एक अलग तरह के वर्तमान समय के बीच अंतर का सुझाव दे।

इस बात का कोई संकेत नहीं है कि पूर्ति का युग समाप्त हो गया है। वास्तव में, मामला इसके विपरीत है। क्योंकि नई अवधि में, भविष्यवाणी के शब्द लटके हुए हैं।

क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ, यह वचन मुझ में पूरा होना अवश्य है। और वह अपराधियों में गिना गया, क्योंकि जो कुछ मेरे विषय में लिखा है, वह पूरा हो गया है। इसलिए, यह परिच्छेद अभी तक कॉनज़ेलमैन के मामले को साबित करने से वास्तव में इसके खिलाफ काम करता है।

क्योंकि यह मंत्रालय के बाद की अवधि को पूर्ति की श्रेणी में रखता है। इस बिंदु की पुष्टि ल्यूक 24:46 और उसके बाद से होती है, जहां पुनरुत्थान के बाद के मिशन को धर्मग्रंथ की पूर्ति कहा जाता है। कॉनज़ेलमैन की गलती यह है कि उन्होंने यीशु के मंत्रालय के बीच अंतर किया है, जिसे उनके विचार में, ल्यूक ने डी-एसचैटोलोजाइज़ किया है और अंत के भविष्य के समय के बीच अंतर किया है।

यह कहना ज़्यादा सही होगा कि लूका ने अंत के समय को इस तरह से विस्तृत किया है कि यह यीशु की सेवकाई से शुरू होता है, इसमें चर्च का समय शामिल है, और यह पारुसिया में पूर्ण होता है। लूका ने अंत को दूर के भविष्य में नहीं धकेला है। उसने इसे इस तरह से बढ़ाया है कि इसमें यीशु के समय से लेकर उद्धार का पूरा युग शामिल हो।

उद्धार अतीत की बात नहीं है, यह यीशु की सेवकाई से संबंधित है। इसकी शुरुआत तब से होती है। आज की पूर्णता चर्च के समय तक जारी रहती है।

दूसरा, पूर्णता के समय को उद्धार की त्रुटि के रूप में वर्णित किया जाना चाहिए। यह एक सकारात्मक दृष्टिकोण है, जिसे यीशु ने अपनाया था। जोआचिम जेरेमियास ने इस बात की ओर ध्यान आकर्षित किया है कि कैसे यशायाह 61:2 का अंतिम भाग, जो हमारे परमेश्वर के प्रतिशोध के दिन की घोषणा करता है, लूका 4:18 और 19 में उद्धरण से हटा दिया गया है।

यह कहना पर्याप्त नहीं है कि यह वाक्यांश इसलिए छोड़ा गया है क्योंकि यह यीशु की सेवकाई के बजाय पारुसिया को संदर्भित करता है। मुद्दा यह है कि यीशु की सेवकाई मुख्य रूप से उद्धार से संबंधित है। यह उद्धरण के शब्दों में सामने आता है।

ऊपर वर्णित लूका 7:22 के उद्धरण के साथ कुछ हद तक ओवरलैप है, इसलिए दोनों अंशों पर एक साथ विचार किया जाना चाहिए। बाद वाला अंश विशेष रूप से यीशु द्वारा किए गए कार्यों से संबंधित है और लोगों के विभिन्न वर्गों, दुर्भाग्यपूर्ण वर्गों को संदर्भित करता है, जिनकी ज़रूरतें यीशु के शक्तिशाली कार्यों और उपदेशों से पूरी हुईं। वे अपनी ज़रूरतों में बदकिस्मत हैं।

वे भाग्यशाली थे कि यीशु उनके लिए सेवक थे। लूका 7:22, यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला पूछता है कि क्या यीशु ही मसीहा है। जाओ और यूहन्ना को बताओ कि तुमने क्या देखा और सुना है।

अंधों को दृष्टि मिलती है, लंगड़े चलते हैं, कोढ़ी शुद्ध हो जाते हैं, बहरे सुनते हैं, मुर्दे जिलाए जाते हैं, गरीबों को सुसमाचार सुनाया जाता है, और धन्य है वह जो मेरे कारण क्रोधित नहीं होता। वह अंश जो मैंने अभी पढ़ा है, उन कार्यों की एक सूची देता है, जो सुसमाचार परंपरा के अनुसार, वास्तव में यीशु द्वारा किए गए थे। उसने अंधों को दृष्टि दी, लंगड़ों को स्वस्थ किया, कोढ़ियों को शुद्ध किया, बहरों को सुना, मुर्दों को जिलाया, और गरीबों को सुसमाचार सुनाया।

कुछ टिप्पणीकारों का मानना है कि भविष्यवाणी को मूल रूप से उपदेश के प्रभावों के रूपक के रूप में लिया गया था, लेकिन इस बात का कोई सबूत नहीं है कि समझ का ऐसा चरण कभी अस्तित्व में था। यह एक असंभावित परिकल्पना है। बल्कि, यीशु के पराक्रमी कार्यों और उपदेश दोनों को भविष्यवाणी की पूर्ति माना जाता है।

जिस तरह से उद्धरण के विभिन्न भागों को पुराने नियम के कई अंशों से एक साथ लाया गया है, वह इस बात का प्रमाण है कि मंत्रालय ने खुद ही पुराने नियम के ग्रंथों के चयन को निर्धारित किया है। मंत्रालय के विवरण को प्रभावित करने के बजाय, मंत्रालय के विवरण को भविष्यवाणी के शब्दों से प्रभावित करने के बजाय, जैसा कि हमने देखा है, लूका में भविष्यवाणी के लगभग हर पहलू को दर्शाने वाली घटनाएँ हैं। और हर मामले में, सुसमाचार परंपरा की विभिन्न धाराओं से आगे सबूत दिए जा सकते हैं।

इसका मतलब यह है कि यदि परंपरा यह बताने में सही है कि यीशु ने ऐसे कार्य किए थे, तो यह पूरी तरह से संभव है कि उद्धरण का उपयोग उसके अपने अनुमान पर वापस जा सकता है कि वह क्या कर रहा था। पीटर स्टुहलमाकर द्वारा विद्वानों की राय की आम सहमति को उलटने का प्रयास कि यह कहावत स्वयं यीशु के पास जाती है, शायद ही विश्वसनीय है। मंत्रालय के अपने चरित्र-चित्रण में, ल्यूक इस प्रकार पारंपरिक सामग्री का उपयोग कर रहा है, जो, पूरी संभावना है, यीशु से उत्पन्न होती है।

कहावत का चरमोत्कर्ष गरीबों को सुसमाचार के प्रचार के संदर्भ में आता है। यहां, दो महत्वपूर्ण शब्द हमारा ध्यान आकर्षित करते हैं। उपदेश का उद्देश्य गरीब है।

पतोकोई, माउंट पर उपदेश, या सादा, ल्यूक 6:20, समानांतर मैथ्यू 5:3 के शुरुआती छंद में इस शब्द की घटना ने विशेष रूप से ई. पर्सी और अन्य लोगों द्वारा बड़ी चर्चा का कारण बना है। पुराने नियम में यह शब्द उन लोगों को संदर्भित करता है जो वस्तुतः गरीब हैं। इसने उत्पीड़ितों की बारीकियों को अपनाया क्योंकि गरीब अमीरों द्वारा किए जाने वाले शोषण के खिलाफ असहाय थे।

इसका मतलब यह था कि गरीबों को अपने सहायक के रूप में यहोवा पर निर्भर रहने के लिए मजबूर होना पड़ा क्योंकि उनके पास कोई मानवीय सहायता नहीं थी। इस प्रकार यह शब्द कमजोरी और यहोवा पर निर्भरता के विचारों को जोड़ता है। जो गरीब हैं वे भगवान की कृपा पर निर्भर हैं।

ई. पर्सी ने इस दृष्टिकोण का दृढ़ता से विरोध किया है कि इस शब्द का अर्थ धर्मपरायण हो गया है, लेकिन उन्होंने अपनी बात को कुछ हद तक बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया है। मुद्दा यह है कि यह शब्द

ईश्वर की कृपा पाने के लिए किए गए धार्मिक कार्यों के सकारात्मक प्रदर्शन पर जोर नहीं देता है, बल्कि पीड़ित की जरूरतमंद स्थिति की ओर ध्यान आकर्षित करता है, जिसे केवल ईश्वर ही ठीक कर सकता है। इस प्रकार गरीब जरूरतमंद और दलित हैं जिनकी जरूरतें सांसारिक सहायकों द्वारा पूरी नहीं की जाती हैं।

जैसा कि मैथ्यू स्पष्ट करता है, इस शब्द का अर्थ शाब्दिक गरीबी तक सीमित नहीं है। क्योंकि मैथ्यू ने कहा, धन्य हैं वे जो मन से दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उनका है। मैथ्यू 5:3. ऐसे ही लोगों को यीशु ने सुसमाचार सुनाया, euangelismai .

यहां फिर से, हम एक ऐसी अवधारणा पर आते हैं जो काफी बहस का विषय रही है। अवधारणा का अर्थ और उत्पत्ति दोनों विवादित हैं। व्युत्पत्तिशास्त्र की दृष्टि से, मूल अच्छी खबर की घोषणा से जुड़ा हुआ है, लेकिन जब प्रकाशितवाक्य 14:6 में उपयोग पर विचार किया जाता है तो यह काफी आम तौर पर स्वीकृत अर्थ कठिनाई में पड़ जाता है।

यहां, संदेश की सामग्री मुक्ति के बजाय निर्णय है। फिर मैंने एक और स्वर्गदूत को देखा, प्रकाशितवाक्य 14:6, पृथ्वी पर रहने वालों, हर राष्ट्र और जनजाति और भाषा और लोगों को प्रचार करने के लिए एक शाश्वत सुसमाचार के साथ सीधे ऊपर उड़ रहा था। और उस ने ऊंचे शब्द से कहा, परमेश्वर से डरो, और उसकी महिमा करो, क्योंकि उसके न्याय करने का समय आ पहुंचा है।

और उसकी आराधना करो जिसने स्वर्ग और पृथ्वी, समुद्र और जल के सोते बनाए, प्रकाशितवाक्य 14:6 और 7। पीटर स्टुहलमाकर द्वारा साक्ष्य के एक नए सर्वेक्षण ने सुझाव दिया है कि अच्छी खबर का अर्थ जड़ और उसके हिब्रू समकक्ष से उतना सुरक्षित रूप से बंधा नहीं है जितना कि आम तौर पर सोचा जाता था और इसलिए क्रिया का उपयोग कुछ हद तक तटस्थ अर्थ में किया जा सकता है। शब्द की उत्पत्ति के बारे में, हेलेनिज़्म में उपयोग के बावजूद, जो कुछ मामलों में न्यू टेस्टामेंट के करीब आता है, स्टुहलमाकर ने निष्कर्ष निकाला है कि यहूदी प्रभाव प्राथमिक था। फिर वह तर्क देता है कि प्रकाशितवाक्य 14, 6 में उपयोग, एक पारंपरिक - ऐतिहासिक दृष्टिकोण से, न्यू टेस्टामेंट में सबसे आदिम है।

यहाँ, एक स्वर्गदूत द्वारा एक घोषणा है जिसमें आने वाले न्याय की घोषणा की गई है, और दुनिया के लोगों को परमेश्वर की आराधना करने के लिए बुलाया गया है। हालाँकि, हमारे पास अपमानित और सताए गए चर्च के लिए आशा का संदेश है कि परमेश्वर उनके लाभ के लिए राजसी शक्ति में कार्य करने वाला है। यह क्रिया का यह युगांतिक उपयोग है जिसे स्टुहलमाकर ने लूका 7:22 में पाया है।

गरीबों के लिए संदेश यह घोषणा है कि परमेश्वर का राज्य उद्धार लाने के लिए निकट है। स्टुहलमाकर द्वारा दी गई व्याख्या पूरी तरह से विश्वसनीय नहीं है। शायद इस बात पर अधिक जोर दिया जाना चाहिए कि नए नियम में दो कारक काम करते हैं।

सबसे पहले, शब्द की ग्रीक में व्युत्पत्ति है, जो निस्संदेह अच्छी खबर के विचार को जन्म देती है। फिर, दूसरा, नए नियम में शब्द के उपयोग का प्राथमिक स्रोत यशायाह में है, जहाँ शब्द का

उपयोग विशेष रूप से अच्छी खबरों के लिए किया गया है। यशायाह 49:41 , 27:52, 7, 61:1. हालाँकि खबरों से जुड़े आनंद के संकेत क्रिया में नहीं बल्कि संदर्भ में हो सकते हैं, ऐसा लगता है कि इसका परिणाम क्रिया को अच्छी खबरों से जोड़ना होगा।

लूका 7:22 में पाए जाने वाले आनंद के सकारात्मक नोट की पुष्टि करने में स्तुहलमाकर से ज़्यादा सकारात्मक होंगे। लूका के अन्य अंशों के हमारे आकलन के लिए इसका निहितार्थ है। स्तुहलमाकर का मानना है कि लूका के कई अंशों में, हमारे पास शब्द का एक ही तटस्थ अर्थ है, जिसे कभी-कभी प्रचार करने की क्रिया, केरुसो के समानांतर इस्तेमाल किया जाता है, और वही अर्थ व्यक्त करता है।

इस कथन से कोई भी सहमत हो सकता है क्योंकि यह स्पष्ट है कि स्तुहलमाकर का उद्देश्य इस बात से इनकार करना है कि ईसाई सुसमाचार का प्रचार करने का तकनीकी अर्थ इन अंशों में मौजूद है। हालाँकि, यह संदिग्ध है कि क्या इन अंशों में क्रिया का कोई शुभ समाचार का अर्थ नहीं है। यह निश्चित रूप से लूका 1, 19 और लूका 2, 10 के लिए सच नहीं है, जहाँ खुशी का विचार स्पष्ट रूप से मौजूद है।

तो, उन जगहों पर यह अच्छी खबर है। लूका 1:19. मैं गेब्रियल हूँ।

मैं परमेश्वर की उपस्थिति में खड़ा हूँ। यह जॉन बैपटिस्ट के पिता जकर्याह के लिए संदेश है, और मुझे आपसे बात करने और आपको यह खुशखबरी लाने के लिए भेजा गया है। यह मेरे लिए बहुत अच्छा लगता है, अच्छी खबर की तरह।

ओह, ESV शब्द का अनुवाद इसी तरह करता है। इसे अन्य तरीकों से अनुवाद करना संभव है, लेकिन वे निश्चित रूप से, ESV की समिति ने सोचा कि समाचार देने में एक अच्छी खबर की गुणवत्ता थी। और इसी तरह, 2:10, मैं आपको बहुत खुशी की अच्छी खबर लाता हूँ जो सभी लोगों के लिए होगी।

आज दाऊद के शहर में एक उद्धारकर्ता का जन्म हुआ है जो मसीह प्रभु है, ऐसा कहा भी जाता है। इसके अलावा, एक बार जब लूका 4:18 में इस शब्द का मूल अर्थ स्थापित हो गया है, तो संभवतः यही अर्थ निम्नलिखित अंशों में भी है। लूका 4:18, प्रभु की आत्मा मुझ पर है।

उसने मुझे गरीबों को खुशखबरी सुनाने, बंदियों को आज़ादी दिलाने, अंधे को दृष्टि वापस दिलाने, सताए हुए लोगों को आज़ादी दिलाने, इत्यादि के लिए अभिषिक्त किया है। संभवतः यही अर्थ निम्नलिखित अंशों में भी है, खासकर उन अंशों में जहाँ प्रचार की विषय-वस्तु को परमेश्वर के राज्य के रूप में नामित किया गया है। समस्या वाला अंश लूका 3:18 है, जहाँ यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की गतिविधि को लोगों को खुशखबरी सुनाने के रूप में वर्णित किया गया है।

इसलिए, कई अन्य उपदेशों के साथ, उन्होंने लोगों को खुशखबरी का प्रचार किया। कॉनज़ेलमैन को विशेष रूप से पहले से ही अधिक सामान्य आधारों पर अस्वीकार कर दिया गया है कि जॉन को सुसमाचार का प्रचार करने वाला माना जा सकता है, क्योंकि यह मोक्ष इतिहास की लूकन

योजना का खंडन करेगा और चूंकि क्रिया को कोई वस्तु नहीं दी गई है। कोई भी आपत्ति वैध नहीं है।

ठीक पूर्ववर्ती छंदों में जॉन के इस प्रश्न का उत्तर है कि क्या वह मसीहा था। वे एक वचन हैं जो वादा करता है कि मसीहा आ रहा है। जॉन के उपदेश की सामान्य सामग्री प्रभु के आगमन की तैयारी के लिए एक उपदेश थी, वह समय जब सभी लोग ईश्वर के उद्धार को देखेंगे, ल्यूक 3:4 से 6। यह निस्संदेह अच्छी खबर थी, आने की घोषणा उद्धारकर्ता।

इस प्रकार, ल्यूक द्वारा दिया गया जॉन का विवरण ल्यूक की ऐतिहासिक योजना के बारे में कॉन्जेलमैन के दृष्टिकोण से भिन्न है, और साथ ही, ल्यूक ने, वास्तव में, जॉन के सुसमाचार के उपदेश की सामग्री प्रदान की है। तीन, हमने अब यह स्थापित कर लिया है कि यशायाह 61:1, और 2 की भविष्यवाणी, जिसका उपयोग ल्यूक 4:18, और 19, और 7:22 में किया गया है, दर्शाती है कि यीशु का समय मुक्ति का युग है। इससे पहले कि इस कथन को बाकी सुसमाचार से और अधिक स्पष्टीकरण मिले, हमें एक तीसरा तथ्य स्थापित करना होगा, जो विशेष रूप से ल्यूक 4, 18 और उसके बाद से उत्पन्न होता है।

यशायाह 61,1 की वही पूर्ति, प्रभु की आत्मा मुझ पर है, अच्छी खबर का प्रचार करने के लिए मेरा अभिषेक कर रही है, आदि, यीशु ने नासरत के आराधनालय में कहा। इसका मतलब यह है कि यीशु को स्वयं भविष्यवाणी की पूर्ति माना जाता है। वह भविष्यवाणी में वादा किया गया व्यक्ति है, क्योंकि वह केवल भविष्यवाणी नहीं करता है कि भगवान अपने लोगों को बचाने जा रहा है। वह वास्तव में अपने उपदेश से उनका उद्धार करते हैं।

उद्धारण में उनके उपदेश के प्रभावों को रूपक के रूप में वर्णित किया गया है, जैसे कि बंदियों को मुक्ति और अंधों को दृष्टि प्रदान करना। उन्होंने घोषणा की कि ईश्वर की कृपा का वर्ष आ गया है, लेकिन महत्वपूर्ण बात यह है कि यह गतिविधि स्वयं यीशु से अविभाज्य है। यह कोई भविष्यवाणी नहीं है कि कुछ घटित होने वाला है। समग्र रूप से सुसमाचार यह स्पष्ट करता है कि मुक्ति वास्तव में लोगों को यीशु की गतिविधि के माध्यम से मिलती है।

जूलियस वेलहाउसन ने सही देखा कि लूका में यीशु का संदेश परमेश्वर के राज्य के बारे में नहीं बल्कि खुद के बारे में है। लेकिन यहाँ यीशु के व्यक्तित्व को क्या महत्व दिया गया है? चूंकि उद्धृत किया गया अंश ऐसा है जिसमें पैगंबर खुद बोलते हैं, इसलिए यीशु को युगांत-संबंधी पैगंबर के रूप में सोचना लुभावना है। लूका में यीशु के व्यक्तित्व की व्याख्या करने के लिए पैगंबर की श्रेणी का काफी हद तक उपयोग कुछ अनुमान लगाता है कि यह विचार अंश में मौजूद है।

मार्क में दो बार लोग यीशु को भविष्यवक्ता कहते हैं। एक बार, वह अपने भाग्य की तुलना एक भविष्यवक्ता से करता है। फ्रेडरिक का दावा है कि यीशु ने यहाँ स्पष्ट रूप से खुद को भविष्यवक्ता नहीं कहा, बल्कि एक कहावत का उपयोग करके अपने विश्वास की तुलना एक भविष्यवक्ता, अपने भाग्य से की।

यह एक अपर्याप्त निर्णय है क्योंकि यह कथन वास्तव में लूका 13:33 में दिए गए स्वतंत्र कथन से भिन्न नहीं है। इसके अलावा, जब तक कथन के लिए कोई सटीक समानांतर प्रस्तुत नहीं किया जाता है, तब तक इसे कहावत नहीं कहा जा सकता है, बल्कि इसे एक नई रचना के रूप में माना जाना चाहिए जिसमें यीशु जानबूझकर खुद की तुलना एक भविष्यवक्ता से करते हैं। क्यू सामग्री में यीशु का भविष्यवक्ता के रूप में कोई संदर्भ नहीं है।

हालाँकि, लूका के विशेष स्रोत में, नाईन में भीड़ यीशु के बारे में कहती है कि नाईन में भीड़ यीशु के बारे में कहती है कि “हमारे बीच एक महान भविष्यद्वक्ता उत्पन्न हुआ है,” लूका 7:16। और शमौन, फरीसी के मन में ऐसा ही अनुमान है जब वह सोचता है कि यीशु में दिव्यदृष्टि की कमी उसके भविष्यद्वक्ता होने के साथ असंगत है (लूका 7:39)। जैसा कि हमने देखा, लूका 13:33 यीशु के भाग्य की तुलना यरूशलेम में मारे गए भविष्यद्वक्ता से करता है।

अंत में, इम्माऊस के रास्ते पर शिष्यों की राय यह थी कि यीशु परमेश्वर और सभी लोगों के सामने कर्म और वचन में शक्तिशाली भविष्यद्वक्ता था (लूका 24:19)। यीशु के बारे में ऐसा दृष्टिकोण प्रारंभिक चर्च में जारी रहा और खुद लूका ने इसे अपनाया, यह प्रेरितों के काम की पुस्तक से स्पष्ट है।

हम इसे प्रेरितों के काम 3:23 में देखते हैं और प्रेरितों के काम 7:37 भी योहानिन क्राइस्टोलॉजी की एक विशेषता है। यह यीशु की बहुत सी गतिविधियों का संतोषजनक ढंग से हिसाब दे सकता है। जैसा कि लूका 24:19 स्पष्ट करता है, वहाँ शब्दों और कार्यों का उल्लेख हमें याद दिलाता है कि एक भविष्यवक्ता की गतिविधि केवल मौखिक रूप से संदेश की घोषणा तक सीमित नहीं थी।

यीशु के दूरदर्शी अनुभव, मनुष्यों के विचारों के बारे में उनका अलौकिक ज्ञान, और उनका पूर्वज्ञान जैसी विशेषताएँ इस पैटर्न में फिट बैठती हैं। इसलिए लूका 4:18 और उसके बाद के अध्याय को यीशु के भविष्यवक्ता होने के संदर्भ में समझना उचित है, जब वह नासरत के आराधनालय में यशायाह 61 का उद्धरण देते हैं। लेकिन हमें आगे जाकर पूछना चाहिए कि क्या लूका में यीशु को यहूदी अपेक्षा के भविष्यवक्ता के रूप में माना गया है।

लूका 7:16 में यीशु को एक महान भविष्यद्वक्ता के रूप में वर्णित करने से यह संकेत मिलता है, लेकिन यह संदिग्ध है कि क्या लूका 7:39 में भी यह निहित है। जहाँ तक लूका 4:18 और उसके बाद की बात है, यह व्याख्या संभव है। यदि यहाँ धार्मिकता के शिक्षक के संदर्भ को सही रूप में लेना सही है, तो कुमरान भजन में यशायाह के उसी अंश के उपयोग से इसे कुछ पुष्टि मिलती है।

स्टुहलमाकर का दावा है कि यीशु का युगांत-संबंधी भविष्यवक्ता के रूप में वही वर्णन लूका 7:22 में मिलता है, जहाँ यीशु को अंत के चमत्कारी भविष्यवक्ता के रूप में वर्णित किया गया है। लेकिन यहाँ एक कठिनाई उत्पन्न होती है क्योंकि जॉन बैपटिस्ट के प्रश्न से यह सवाल उठता है कि क्या यीशु आने वाले हैं, लूका 7:19 और 20। क्या इस वाक्यांश का उपयोग युगांत-संबंधी भविष्यवक्ता को इंगित करने के लिए किया जा सकता है, या क्या यह मसीहा को संदर्भित करता है? पहले दृष्टिकोण के पक्ष में, यह तर्क दिया जाता है कि लूका 7:22 में वर्णित कार्य दयालु मसीहा

द्वारा किए गए कार्य नहीं हैं, बल्कि वे भविष्यवक्ता के कार्य हैं जो जंगल की अवधि की स्वर्गीय स्थितियों को पुनर्स्थापित करते हैं।

लेकिन दूसरी ओर, जॉन के उपदेश में, आने वाले को मसीहा के साथ पहचाना जाना चाहिए, जब तक कि हम इस दृष्टिकोण को असंभावित रूप से स्वीकार नहीं करते कि जॉन खुद को वह भविष्यवक्ता मानता था जिसने स्वयं युगांतशास्त्रीय भविष्यवक्ता के बजाय युगांतशास्त्रीय भविष्यवक्ता के आने की घोषणा की थी। फिर, सबूत से पता चलता है कि आने वाला शब्द निश्चित रूप से मसीहा के लिए इस्तेमाल किया गया था। यदि फिर यीशु मसीहा है, तो हम उसके भविष्यसूचक कार्यों का हिसाब कैसे दें? इस समस्या का समाधान उस भ्रम को उजागर करने में निहित है जो युगांतशास्त्रीय भविष्यवक्ता के विचार में छिपा है।

दरअसल, यहां परंपरा की दो धाराओं को उजागर किया जा सकता है, जो दर्शाती हैं कि एलियाह की वापसी और मूसा जैसे भविष्यवक्ता के आने की उम्मीदें थीं। यह तनाव प्रारंभिक चर्च में परिलक्षित होता है। आरंभिक चर्च में, जॉन द बैपटिस्ट को एलिजा के रूप में माना जाता था, भले ही उन्होंने स्वयं विनम्रतापूर्वक मना कर दिया था, भूमिका से इनकार कर दिया था, लेकिन नए मूसा के रूप में नहीं।

हालाँकि यीशु के कुछ कार्यों को एलिजा और एलीशा टाइपोलॉजी के संदर्भ में समझा गया था, लेकिन उनकी पहचान एलिजा के साथ नहीं, बल्कि नए मूसा के साथ की गई थी। जबकि एलियाह की पहचान आम तौर पर मसीहा के साथ नहीं की गई थी, मूसा जैसे भविष्यवक्ता को मसीहाई शब्दों में युगांतकारी उद्धारकर्ता के रूप में वर्णित किया गया था। ल्यूक 24, 19 से 21 में, एक भविष्यवक्ता के रूप में यीशु का वर्णन उसके जीवन के विवरण और फिर शब्दों के बाद किया गया है, लेकिन हमें उम्मीद थी कि वह इसराइल को छुड़ाने वाला था।

फ्रेडरिक इसका मतलब यह निकालते हैं कि मूसा जैसे भविष्यवक्ता को लोगों को उसी तरह से छुटकारा दिलाना था जैसे मूसा ने किया था। अधिनियम 7:35 से 37। यदि हां, तो मसीहा के कार्य को मेस, मोज़ेक पैगंबर के कार्यों के संदर्भ में समझा जा सकता है।

इसलिए, ल्यूक 7:19 से 22 की चर्चा में विभिन्न विद्वानों ने युगांत-संबंधी भविष्यवक्ता और मसीहा के कार्यों के बीच अंतर किया है। युगांत-संबंधी भविष्यवक्ता के रूप में मसीहा के कार्य झूठे साबित हुए। यीशु ही मसीहा हैं।

अगर हम अब लूका 4:18 और उसके बाद के अध्यायों पर लौटते हैं, तो यह याद आएगा कि हमने पहले यह सवाल उठाया था कि क्या यशायाह 61 में वक्ता को सेवक माना गया था। अगर ऐसा है, तो सेवक का कार्य पहले से ही यशायाह में मूसा के कार्य की पुनरावृत्ति और भविष्यसूचक के रूप में समझा जाता है। वह जंगल की अवधि की स्थितियों को आदर्श रूप से कल्पित रूप में पुनर्स्थापित करता है, और वह एक भविष्यवक्ता की भूमिका निभाता है जो अंधे लोगों की आँखें खोलता है और कैदियों को मुक्त करता है।

आरंभिक चर्च ने मसीहा के नौकर के बीच, नौकर और मसीहा के बीच पहचान बनाई, एक पहचान, जो हमारी राय में, यीशु द्वारा पहले ही बनाई गई थी। इसका मतलब यह है कि ल्यूक 4:18 और उसके बाद, और ल्यूक 7:19 से 22 में, हमारे पास मूसा और यहोवा के सेवक जैसे युगांतवादी भविष्यवक्ता की गतिविधि के संदर्भ में मसीहा के कार्य का वर्णन है। यहोवा का सेवक. ल्यूक 4:18 में और यशायाह 61,1 के उद्धरण के बाद, यीशु स्वयं पर लागू होता है।

और 7, 19 से 22, यह कुछ हद तक एक निष्कर्ष है जिस पर मार्शल पहुँच रहा है। 7:19 से 22, जहां जॉन बैपटिस्ट पूछता है, क्या यह वही है, क्या आप ही आने वाले हैं, या हमें दूसरे की तलाश करनी चाहिए? और यीशु कहते हैं, जा कर यूहन्ना से कहो कि तुम ने क्या देखा और सुना है। अंधों को दृष्टि मिलती है, लंगड़ों को चलना इत्यादि।

गरीब लोग खुशखबरी सुनते हैं। यीशु पुराने नियम से उन कामों को दोहराते हैं और कहते हैं कि उन्होंने वे काम किए हैं। इसका मतलब यह है कि लूका 4:18 और उसके बाद, और जिस अंश का मैंने अभी उल्लेख किया है, लूका 7:19 से 22 तक, हमें मूसा की तरह, नंबर एक और नंबर दो, यहोवा के सेवक, यशायाह में प्रभु के सेवक की तरह, युगांतशास्त्रीय भविष्यद्वक्ता की गतिविधि के संदर्भ में मसीहा के कार्य का विवरण मिलता है।

यह दावा अक्सर किया जाता रहा है कि यीशु ने मनुष्य के पुत्र की गतिविधि को यहोवा के सेवक के कार्य के संदर्भ में समझा, जो पीड़ित होता है और मर जाता है। हमारी जांच से पता चला है कि सेवक की अवधारणा का प्रभाव इससे कहीं अधिक व्यापक है और यह यीशु की संपूर्ण सेवकाई तक फैला हुआ है। यीशु की मसीहाई गतिविधियाँ सेवक की ही थीं।

जैसा कि मैथ्यू 8:17, 12, 17 से 21, सही ढंग से समझा गया है। हमारी चर्चा में, हम ल्यूक के पीछे उन परंपराओं की ओर लौट आए हैं जो उसे विरासत में मिली थीं। परिणाम यह दर्शाता है कि ल्यूक ने यीशु के बारे में एक दृष्टिकोण अपनाया जो उसे न केवल एक भविष्यवक्ता के रूप में देखता था, बल्कि अंतिम भविष्यवक्ता, सेवक और मसीहा के रूप में देखता था।

यह एक महत्व है जो यीशु के व्यक्तित्व से जुड़ा हुआ है और इसका चरित्र ऐसा है कि हम यह निष्कर्ष निकालने के लिए बाध्य हैं कि ल्यूक के विचार में, यीशु का संदेश उसके अपने व्यक्तित्व से बहुत चिंतित था। यह सच है कि हालाँकि ये उपाधियाँ यीशु पर लागू नहीं की जाती हैं या केवल सुसमाचार में संयम के साथ लागू की जाती हैं, लेकिन उनसे जुड़ी गतिविधियाँ स्पष्ट रूप से मौजूद हैं और परंपरा पर टिकी हुई दिखाई गई हैं। अधिनियमों में, इन संकेतों को और अधिक सटीक बनाया जा सकता है।

हालाँकि, सुसमाचार यह स्पष्ट करने के लिए पर्याप्त है कि यीशु पुराने नियम की भविष्यवाणियों की पूर्ति है, जिसमें विभिन्न शब्दों में, एक उद्धारकर्ता के आने का वादा किया गया था। ईश्वर का राज्य तीनों सिनॉटिक सुसमाचारों में, प्रचारकों का कहना है कि यीशु का उपदेश मुख्य रूप से ईश्वर के राज्य से संबंधित था। हालाँकि ल्यूक के पास मार्क में निहित यीशु के उपदेश का सारांश नहीं है, लेकिन उनके सामान्य बयानों से पता चलता है कि उन्होंने इस दृष्टिकोण को साझा किया था।

ल्यूक की प्रस्तुति ने राज्य के विषय को अच्छी खबर की घोषणा के अधीन कर दिया है, लेकिन राज्य अच्छी खबर का विषय बना हुआ है। इसलिए, ल्यूक में अवधारणा का अर्थ निर्धारित करना महत्वपूर्ण है। यीशु की शिक्षाओं की मुख्य पंक्तियाँ संदेह में नहीं हैं और उन्हें संक्षेप में प्रस्तुत किया जा सकता है।

राज्य शब्द का प्रयोग मुख्य रूप से मानव इतिहास में अपना शासन स्थापित करने के लिए हस्तक्षेप करने में ईश्वर की कार्रवाई के लिए किया जाता है। कई ग्रंथों से पता चलता है कि यीशु ने राज्य के अंत और प्रकट आगमन को आसन्न माना था। ग्रंथों का एक और सेट इंगित करता है कि यीशु ने अपने स्वयं के मंत्रालय को राज्य के आगमन के संबंध में पूर्ति के समय के रूप में देखा।

इन ग्रंथों का अर्थ है कि राज्य यीशु के मंत्रालय के दौरान पहले ही आ चुका था, और वे यह निष्कर्ष निकालते हैं कि यीशु ने इस ध्रुवता को समझाने की बात की थी, कि यीशु ने राज्य की उपस्थिति और भविष्य दोनों के बारे में बात की थी। कॉनज़ेलमैन ने दावा किया कि ल्यूक के राज्य के विषय के उपचार ने राज्य को विशेष रूप से भविष्य और आसन्न भी माना। फिर उन्होंने तर्क दिया कि ल्यूक ने परंपरा को संशोधित किया है, इसलिए यह अवधारणा अन्य सुसमाचारों की तुलना में और भी अधिक पारलौकिक हो गई है।

इसने इतिहास से संपर्क खो दिया है और इसे दूर के भविष्य में स्थानांतरित कर दिया गया है। हमारा मानना है कि यह ल्यूक के दृष्टिकोण की गलतफहमी है। कॉनज़ेलमैन की गलती यह है कि वह राज्य की उपस्थिति के बारे में शिक्षा के साथ न्याय करने में विफल रहा।

जो पहले से ही परंपरा का हिस्सा था। चूंकि मैथ्यू और ल्यूक अपने शब्दों में सहमत हैं, इसलिए हम निश्चित हो सकते हैं कि राज्य को एक वर्तमान इकाई के रूप में बताया गया है। इन ग्रंथों का प्रमाण पर्याप्त रूप से स्पष्ट है।

वे ऐसी अजीबोगरीब शर्मिंदगी नहीं हैं जिन्हें समझाया जा सके; बल्कि उन्हें यीशु की बातों के साथ जोड़कर देखा जाना चाहिए, जो वर्तमान को पूर्णता के समय के रूप में अधिक सामान्य तरीके से बोलते हैं और उन कार्यों के साथ जिन्हें उन्होंने आत्मा के माध्यम से ईश्वर की वर्तमान गतिविधि के संकेत के रूप में माना। वे प्रदर्शित करते हैं कि यीशु के लिए, राज्य पहले से ही उनकी सेवकाई में मौजूद था। तब राज्य की उपस्थिति परंपरा में दृढ़ता से निहित होती है।

लेकिन कॉनज़ेलमैन का दावा है कि ल्यूक के लिए, जो वर्तमान समय का है वह स्वयं राज्य नहीं है बल्कि केवल राज्य का संदेश है। हॉवर्ड मार्शल कॉनज़ेलमैन से असहमत हैं, उनका दावा है कि संदेश और राज्य दोनों मौजूद हैं। राज्य पाठ के इस सर्वेक्षण से, यह उभर कर आता है कि ल्यूक में प्रस्तुति पहले की परंपरा से काफी अलग नहीं है, जहां राज्य की उपस्थिति और प्रतिष्ठा दोनों की पुष्टि की गई थी।

हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि भविष्य में राज्य के आने की आशा ल्यूक के विचार के केंद्र में नहीं है, लेकिन उसने निश्चित रूप से इस विचार को नहीं छोड़ा है। ल्यूक 11 2, ल्यूक 22 29 और 30, ल्यूक 23 42. ल्यूक का जोर राज्य की उपस्थिति पर है।

यीशु के उपदेश से राज्य की शक्ति प्रकट होती है। यह परमेश्वर के वचन की पुराने नियम की अवधारणा के साथ फिट बैठता है, जो अपने आप में शक्तिशाली है और परमेश्वर की इच्छा को प्रभावित करता है। एक अन्य बिंदु पर विचार करना बाकी है।

हमने तर्क दिया है कि ल्यूक परंपरा में पाए जाने वाले राज्य की श्रेष्ठता के विचार को बरकरार रखता है। लेकिन इस दृष्टिकोण पर एक कड़ी आपत्ति है, अर्थात् ल्यूक में अन्य गूढ़ शिक्षा का तात्पर्य है कि राज्य के आगमन से जुड़ी घटनाओं को अनिश्चित भविष्य में धकेल दिया गया है। हालाँकि ल्यूक ने राज्य के आगमन के बारे में पारंपरिक शब्दावली को बरकरार रखा है, लेकिन वास्तव में उसने इस विचार को छोड़ दिया है।

हमारे विचार में, यह आपत्ति स्थिति की अतिशयोक्ति का प्रतिनिधित्व करती है। सबसे पहले, जिस तरह से ल्यूक ने अध्याय 21 में सामग्री का आदेश दिया है, उसके बावजूद, यरूशलेम के पतन को अभी भी एक युगांतकारी घटना माना जाता है। यह अंत से जुड़ी एक घटना के रूप में अपना चरित्र बरकरार रखता है।

मार्क में, इसे विनाशकारी अपवित्रता के रूप में वर्णित किया गया है और इसके बाद लौकिक संकेत और फिर मनुष्य के पुत्र का आगमन होता है। ल्यूक में, पैटर्न बरकरार रखा गया है। पुराने नियम की भाषा का रंग अधिक स्पष्ट है, इस प्रकार पारूसिया में पूर्ति के नोट और लौकिक संकेतों पर जोर दिया गया है जैसा कि मार्क में है।

दोनों सुसमाचारों में, यरूशलेम का पतन उन सभी चीजों में शामिल है जो घटित होनी चाहिए। साथ ही, पतन ऐतिहासिक विकास का हिस्सा है जो पारौसिया तक ले जाता है। लेकिन मार्क में यह पहले से ही मामला है, जैसा कि ई. अर्ल एलिस द्वारा प्रदर्शित किया गया है, जो सही दावा करता है कि ल्यूक यहां मार्क को ऐतिहासिक नहीं बना रहा है।

दूसरा, लूका द्वारा पारूसिया से पहले अंतराल पर जोर दिया जाना अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं होना चाहिए। हमें लूका 21:9 में वाक्यांश, लेकिन अंत तुरंत नहीं होगा, को बहुत अधिक नहीं पढ़ना चाहिए। यह लूका द्वारा मार्क के लिए समतुल्य है, लेकिन अंत अभी नहीं है, मार्क 13:7। और परिवर्तन केवल शैलीगत है। अन्यजातियों के रहस्यमय समय का संदर्भ दिखाता है कि यरूशलेम के पतन के बाद का अंतराल ध्यान में है।

फिर भी, संक्षेप में, लूका मार्क से आगे नहीं बढ़ा है। एलिस ने तर्क दिया है कि मार्क 13:10 और लूका 21:32 में पीढ़ी अंतिम पीढ़ी है, एक ऐसा वाक्यांश जो कई जीवनकालों को कवर कर सकता है। कहावत का उद्देश्य श्रोताओं को आश्चस्त करना है कि वे अंतिम पीढ़ी का हिस्सा हैं और इसलिए, अंतिम घटनाएँ पहले से ही हो रही हैं।

पारौसिया की अपेक्षा की अवधि को मार्क में सीमांकित नहीं किया गया है, उदाहरण के लिए, एक पीढ़ी की अवधि तक, ल्यूक की तुलना में किसी भी अधिक। मार्क इस बारे में कुछ नहीं कहता कि अंत कितना निकट है। जोर इसके अचानक, अप्रत्याशित रूप से आने पर है, मार्क 13:36, एक बिंदु जो मार्क के पाठकों के लिए अभी भी सच है, मार्क 13:37। वास्तव में, मार्क यह स्पष्ट करता है कि अंतिम समापन से पहले कई घटनाएँ होनी चाहिए।

तथ्य यह है कि अंत से पहले एक अंतराल है, कि अंत तत्काल के बजाय आसन्न है, इसका मतलब यह नहीं है कि अंत को सुदूर भविष्य के लिए इतना टाल दिया गया है कि शिष्यों के लिए इसकी प्रासंगिकता खत्म हो गई है। ल्यूक ने काफी संख्या में कहावतें संरक्षित की हैं जिनमें अंत से जुड़े आशीर्वाद और दुःख यीशु के समकालीनों के लिए महत्वपूर्ण हैं। हम संक्षेप में मैदान पर उपदेश, लूका 6:20 से 26, मनुष्य के पुत्र के भविष्य के आगमन के बारे में बातें, लूका 9:26, 12:8, और 9, और श्लोक 40 का उल्लेख कर सकते हैं।, लूका 18:8, भविष्य के न्याय के बारे में चेतावनियाँ, लूका 11:29 से 32, और राज्य में प्रवेश और बहिष्कार के बारे में बातें, लूका 13:25 और 30, 14:14, 15 से 24, 16:9, और 18, 24.

इस प्रकार अंत अब लोगों के जीवन के लिए प्रासंगिक है। उन्हें इसके आने का इंतज़ार करने में सुस्ती नहीं दिखानी चाहिए। लूका 18:8, एक उपदेश जिसे पारूसिया की देरी के कारण देर से समुदाय गठन के रूप में नहीं समझाया जाना चाहिए, बल्कि यह यीशु की प्रामाणिक शिक्षा है जिसने खुद अंत से पहले एक अंतराल की उम्मीद की थी।

शिष्यों को मनुष्य के पुत्र के आने की आशा के प्रकाश में अपने व्यवहार को नियंत्रित करना है। स्वाभाविक रूप से, इसका मतलब यह नहीं है कि वे केवल स्वर्गीय आशीर्वाद की आशा या भविष्य के दुःख के डर से प्रेरित होंगे या यह कि अंत की निकटता ही मूल रूप से उनके आचरण को प्रेरित करती है। यह संकट की निकटता नहीं है जो नए नियम की नैतिकता को प्रेरित करती है, बल्कि परमेश्वर का चरित्र है।

हम इस अनुभाग के परिणामों को संक्षेप में एक साथ प्रस्तुत कर सकते हैं। यह सामने आया है कि ल्यूक के सुसमाचार में, राज्य की उपस्थिति और भविष्य के बारे में यीशु की शिक्षा को ईमानदारी से दोहराया गया है। जबकि ल्यूक भविष्य में राज्य के आने की आशा बरकरार रखता है, वह यीशु के मंत्रालय में एक वास्तविकता के रूप में राज्य की उपस्थिति पर भी जोर देता है।

इस प्रकार मार्क के सुसमाचार के धर्मशास्त्र पर हमारा व्याख्यान समाप्त होता है। अपने अगले व्याख्यान में, हम प्रेरितों के कार्य के धर्मशास्त्र के बारे में बात करना शुरू करेंगे।

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन और ल्यूक-एक्ट्स के धर्मशास्त्र पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 10 है। मैं, हॉवर्ड मार्शल, द प्रॉमिस्ड सेवियर और द किंगडम ऑफ गॉड।